

वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट 2023

प्रलम्ब के लिये:

[वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित \(STEM\)](#), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2023, बरिऑन्ड बेसकिस, एनजीओ प्रथम।

मेन्स के लिये:

भारत में शिक्षा की स्थिति, शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2023

[स्रोत: द हद्वि](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एनजीओ प्रथम द्वारा 'बरिऑन्ड बेसकिस' शीर्षक से 18वीं [शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट \(Annual Status of Education Report - ASER\) 2023](#) जारी की गई, जिसमें छात्रों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों, उनकी बुनियादी और व्यावहारिक पढ़ने तथा गणित क्षमताओं एवं डिजिटल जागरूकता व कौशल पर चर्चा की गई।

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (ASER) क्या है?

- ASER एक वार्षिक, नागरिक-नेतृत्व वाला घरेलू सर्वेक्षण है जिसका उद्देश्य यह समझना है कि ग्रामीण भारत में बच्चे स्कूल में नामांकित हैं या नहीं और क्या वे सीख रहे हैं?
- ASER भारत के सभी ग्रामीण जिलों में वर्ष 2005 से प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है। यह भारत में नागरिकों के नेतृत्व वाला सबसे बड़ा सर्वेक्षण है।
- ASER सर्वेक्षण 3-16 वर्ष की आयु के बच्चों की नामांकन स्थिति और 5-16 वर्ष की आयु के बच्चों को राष्ट्रीय, राज्य तथा जिला स्तर पर बुनियादी शिक्षा एवं अंकगणतीय स्तर के प्रतिनिधि अनुमान उपलब्ध कराता है।

ASER 2023 की मुख्य बातें क्या हैं?

- नामांकन दर:
 - कुल मिलाकर, 14-18 वर्ष के 86.8% बच्चे किसी शैक्षणिक संस्थान में नामांकित हैं।
 - हालाँकि उम्र के हिसाब से उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है, 14 साल के 3.9% और 18 साल के 32.6% बच्चों ने नामांकन नहीं कराया है।
 - 14-18 आयु वर्ग के अधिकांश छात्र कला/मानविकी स्ट्रीम में नामांकित हैं, आधे से अधिक (55.7%) ग्यारहवीं कक्षा या उच्चतर में इस स्ट्रीम में पढ़ रहे हैं।
 - वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (Science, Technology, Engineering, and Mathematics -STEM) स्ट्रीम में पुरुषों (36.3%) की तुलना में कम महिलाएँ केवल 5.6% ही व्यावसायिक प्रशिक्षण या संबंधित पाठ्यक्रम ले रहे हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण कॉलेज स्तर के छात्रों (16.2%) के बीच अधिक प्रचलित है।
 - अधिकांश युवा छह महीने या उससे कम अवधि के अल्पावधि पाठ्यक्रम ले रहे हैं।
- बुनियादी योग्यताएँ:
 - लगभग 25% युवा अपनी क्षेत्रीय भाषा में कक्षा 2 स्तर का पाठ धाराप्रवाह नहीं पढ़ सकते हैं।
 - आधे से अधिक लोग वभाजन की समस्याओं (3 अंक में से 1 अंक) से जूझते हैं, 14-18 वर्ष के केवल 43.3% बच्चे ही ऐसी समस्याओं को सही ढंग से हल कर पाते हैं।
- भाषा और अंकगणित कौशल:

- महिलाओं (76%) ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में मानक II स्तर का पाठ पढ़ने में पुरुषों (70.9%) से बेहतर प्रदर्शन किया जबकि पुरुषों ने अंकगणित एवं अंग्रेज़ी पढ़ने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
- केवल 57.3% अंग्रेज़ी में वाक्य पढ़ने में सक्षम थे तथा उनमें से लगभग तीन-चौथाई उनका अर्थ समझने में सक्षम थे।
- **डिजिटल जागरूकता और कौशल:**
 - कुल युवाओं में से लगभग 90% के पास घर में स्मार्टफोन है तथा 19.8% महिलाओं की तुलना में 43.7% पुरुषों के पास स्वयं का स्मार्टफोन है।
 - पुरुष अमूमन डिजिटल कार्यों में महिलाओं से बेहतर प्रदर्शन करते हैं एवं शिक्षा स्तर व बुनियादी पढ़ने की दक्षता की सहायता से डिजिटल कार्यों में यह प्रदर्शन बेहतर हो सकता है।
- **मूलभूत संख्यात्मक कौशल:**
 - 14-18 आयु वर्ग के 50% से अधिक छात्रों को प्राथमिक विभाजन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा लगभग 45% को एक बच्चे के सोने व जागने के समय के आधार पर उसके सोने के घंटों की संख्या की गणना करने जैसे कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ता है।
 - अपर्याप्त मूलभूत संख्यात्मक कौशल बजट प्रबंधन, छूट लागू करने तथा ब्याज दरों अथवा ऋण भुगतान की गणना सहित रोज़मर्रा की गणना में युवाओं की दक्षता में बाधा डालते हैं।
- **अनुशासनात्मक:**
 - 14-18 आयु वर्ग के लिये पहलों के कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल में अंतराल को पाटने के लिये सरकारी प्रयासों की आवश्यकता है।
 - **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy- NEP) 2020** अकादमिक रूप से पछिड़े के लिये 'कैच-अप' (Catch-up) कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देती है।
 - न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन के लिये अपितु उनकी दैनंदिन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये युवाओं के बीच मूलभूत साक्षरता तथा संख्यात्मक कौशल में सुधार लाने के उद्देश्य से पहल की आवश्यकता है।
- **डिजिटल शिक्षा:**
 - स्मार्टफोन की उपलब्धता:
 - लगभग 90% भारतीय युवाओं के पास अपने घर में स्मार्टफोन है तथा वे इसका उपयोग करना जानते हैं। यह इस जनसांख्यिकीय के बीच व्यापक डिजिटल कनेक्टिविटी को इंगित करता है।
 - डिजिटल साक्षरता में लैंगिक अंतराल:
 - डिजिटल साक्षरता में महत्वपूर्ण लैंगिक असमानता है। रपॉर्ट के अनुसार लड़कों की तुलना में लड़कियाँ स्मार्टफोन अथवा कंप्यूटर का उपयोग करने में कम दक्ष थीं।
 - लड़कों (43.7%) के पास स्वयं का स्मार्टफोन होने की संभावना लड़कियों (19.8%) की तुलना में दोगुनी से भी अधिक थी।
 - नज्दी स्मार्टफोन स्वामित्व में एक उल्लेखनीय लैंगिक अंतराल है। लड़कों के पास अपना स्मार्टफोन होने की संभावना लड़कियों की तुलना में दोगुनी से भी अधिक है।
 - वभिन्न डिजिटल कार्यों में लड़कों ने लड़कियों से बेहतर प्रदर्शन किया।
 - ऑनलाइन सुरक्षा जागरूकता:
 - लड़कियों की तुलना में लड़के ऑनलाइन सुरक्षा सेटिंग्स से अधिक परिचित हैं। यह ऑनलाइन सुरक्षा प्रथाओं में लड़कियों को शक्ति तथा सशक्त बनाने के लिये लक्षित प्रयासों की आवश्यकता का सुझाव देता है।
 - शिक्षा के लिये स्मार्टफोन का उपयोग:
 - लगभग दो-तहाई लोग शैक्षणिक उद्देश्यों के लिये स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं, जैसे कि पिढ़ाई से संबंधित ऑनलाइन वीडियो देखना, शंका समाधान करना या नोट्स का आदान-प्रदान करना।
 - मूल्यांकन के लिये सीमिति कनेक्टिविटी:
 - हालाँकि सर्वेक्षण का उद्देश्य स्मार्टफोन का उपयोग करके डिजिटल कौशल का आकलन करना था, लेकिन सभी युवा अच्छी कनेक्टिविटी वाला स्मार्टफोन नहीं ला सकते थे। लड़कियों की तुलना में लड़कों द्वारा मूल्यांकन के लिये स्मार्टफोन लाने की अधिक संभावना थी, जो पहुँच में वसिंगतियों का संकेत देता है।
 - गैर-नामांकित युवाओं के बीच शैक्षणिक गतिविधियाँ:
 - एक चौथाई गैर-नामांकित युवाओं ने अपने स्मार्टफोन पर शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न होने की सूचना दी, जो औपचारिक शैक्षणिक व्यवस्था के बाहर सीखने में सहायता में डिजिटल उपकरणों की भूमिका पर बल देते हैं।

भारत में प्रारंभिक शिक्षा के सामने आने वाली समस्याएँ क्या हैं?

- **स्कूल का बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ:**
 - प्रतिधारण दर (Retention rates) में सुधार के बावजूद, स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता को लेकर चिंताएँ हैं। जबकि 95% स्कूलों में पीने का पानी और शौचालय की व्यवस्था है, 10% से अधिक स्कूलों में बिजली की व्यवस्था का अभाव है।
 - इसके अतिरिक्त, डिजिटलीकरण की कमी है, 60% से अधिक स्कूलों में कंप्यूटर की कमी है और 90% में इंटरनेट सुविधाओं तक पहुँच नहीं है।

- **नजी स्कूलों की ओर बदलाव:**
 - पछिले कुछ वर्षों में, नजी स्कूलों की ओर रुझान बढ़ा है। सरकारी डेटा इंगति करता है कि प्राथमिक श्रेणी में सरकारी स्कूलों की हस्सेदारी वर्ष 2006 में 87% से घटकर मार्च 2020 में 62% हो गई है।
- **शिक्षक की कमी और गुणवत्ता:**
 - स्कूलों में शिक्षकों की कमी है और छात्र-शिक्षक अनुपात(student-teacher ratio) अधिक है। संवदि शिक्षकों पर नरिभरता देखी गई है और बड़े पैमाने पर शिक्षकों की अनुपस्थिति है।
 - शिक्षा की गुणवत्ता अलग-अलग होती है, जसिमें अच्छी तरह से वतित पोषति, औपचारिक स्कूलों और अल्प-संसाधन वाले, अनौपचारिक स्कूलों के बीच स्पष्ट वभिजन होता है।
- **सामाजिक वभिजन:**
 - जात-विरग, ग्रामीण-शहरी, धार्मिक और लैंगिक वभिजन सहति सामाजिक वभिजन मौजूद हैं, जो प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावति कर रहे हैं।

भारत बुनयादी शिक्षा को कैसे बढ़ावा दे सकता है?

- **वतित तथा संसाधन आवंटन में वृद्धि:**
 - सरकार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP), 2020 में उल्लिखति सकल घरेलू उत्पाद के अनुशंसति दशि में 6% आगे बढ़ते हुए शिक्षा के लयि अधिक धन आवंटति करना चाहयि।
 - बुनयादी ढाँचे के वकिस, शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूलों में आवश्यक सुवधाओं के प्रावधान के लयि वतित पोषण को प्राथमकिता देना।
- **शिक्षक भरती एवं प्रशिक्षण:**
 - उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात को कम करने के लयि पर्याप्त संख्या में योग्य शिक्षकों की भरती एवं प्रशिक्षण करना।
 - शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु नरितर व्यावसायिक वकिस के लयि कार्यक्रम लागू करना।
- **ड्रॉपआउट दरों को संबोधति करना:**
 - सामाजिक-आर्थिक कारकों, बुनयादी ढाँचे की कमी और शिक्षा की गुणवत्ता सहति छात्रों के स्कूल छोड़ने के मूल कारणों की पहचान करें तथा उनका समाधान करें।
 - छात्र प्रतधारण को प्रोत्साहति करने के लयि छात्रवृत्ति कार्यक्रम और परामर्श पहल जैसे लक्षति हस्तक्षेप लागू करें।
- **बुनयादी ढाँचे का वकिस:**
 - स्कूल के बुनयादी ढाँचे के वकिस में नविश करें, यह सुनिश्चित करें कि सभी स्कूलों में बजिली, स्वच्छ पेयजल और उचित स्वच्छता सुवधाएँ जैसी बुनयादी सुवधाएँ हों।
 - स्कूलों को कंप्यूटर और इंटरनेट की सुवधा प्रदान करके शिक्षा में प्रौद्योगिकि के एकीकरण को बढ़ावा देना।
- **शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान देना:**
 - घूर्णी याद करने की तुलना में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्त्व पर जोर दें।
 - बाल-केंद्रति शिक्षण वधियि और मूल्यांकन रणनीतियि को लागू करें जो महत्त्वपूर्ण सोच तथा समस्या-समाधान कौशल को प्रोत्साहति करें।
- **जाँचना और परखना:**
 - शिक्षा नीतियि और हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लयि मज़बूत नगिरानी तथा मूल्यांकन तंत्र स्थापति करें।
 - सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और तदनुसार रणनीतियि को समायोजति करने के लयि डेटा-संचालति अंतरदृष्टि का उपयोग करें।

शिक्षा से संबंधति सरकारी पहल क्या हैं?

- [नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एनहांसड लरनिग \(NPTEL\)](#)
- [सरव शिक्षा अभियान](#)
- [प्रज्जाता \(PRAGYATA\)](#)
- [मध्याहन भोजन योजना](#)
- [बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ](#)
- [पीएम शरी स्कूल](#)
- [राष्ट्रीय शिक्षा नीति\(NEP\) 2020:](#)
 - NEP 2020 शिक्षा प्रणाली में बदलाव पेश करता है, जसिमें कक्षा 5 तक मातृ भाषा या स्थानीय भाषा का उपयोग, व्यापक शिक्षा ढाँचे और वभिन्न स्तरों पर परीक्षाओं की शुरुआत शामिल है। हालाँकि इन नीतियि के कार्यान्वयन में चुनौतियि बनी हुई हैं।

- NEP 2020 सकल घरेलू उत्पाद के 6% के लक्ष्य की सफ़ारिश करते हुए शिक्षा में सार्वजनिक नविश बढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. संवधान के नमिनलखिति में से कसि प्रावधान का भारत की शकिषा पर प्रभाव पडता है? (2012)

1. राज्य के नीतनिदिशक सदिधांत
2. ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय नकियाय
3. पाँचवी अनुसूची
4. छठी अनुसूची
5. सातवी अनुसूची

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 3, 4 और 5
- (c) केवल 1, 2 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4 और 5

उत्तर:(d)

??????:

प्रश्न. भारत में डजिटिल पहल ने कसि प्रकार से देश की शकिषा व्यवस्था के संचालन में योगदान कयि है? वसितृत उत्तर दीजयि। (2020)

प्रश्न. जनसंख्या शकिषा के मुख्य उद्देश्यों की वविचना करते हुए भारत में इन्हें प्राप्त करने के उपायों पर वसितृत प्रकाश डालयि। (2021)